मसीह की दुल्हन

आत्मा ने हमारे लिए कलीसिया को प्रस्तुत करने के लिए विभिन्न अलंकारों अर्थात रूपकों का इस्तेमाल किया है। प्रत्येक अलंकार किसी विशेष गुण पर ज़ोर देता है। कलीसिया के इसके प्रबन्ध पर ज़ोर देने के लिए इसे राज्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है। देह के रूप में, इसकी एकता पर ज़ोर दिया गया है। इस अध्ययन में हम देखेंगे कि कलीसिया का चित्रण मसीह की दुल्हन के रूप में किया गया है। इस धारणा की शिक्षा कई आयतों में मिलती है और हम उनमें से प्रत्येक पर ध्यान देंगे। (देखिए यूहन्ना 3:28-30; इफिसियों 5:22-32; रोमियों 7:1-4; 2 कुरिन्थियों 11:2।) इस अलंकार के अधीन कलीसिया पर चिन्तन करते हुए बहुत से सबक स्पष्ट हो जाते हैं।

मसीह से विवाह के लिए कदम

राज्य के रूप में कलीसिया पर विचार करते समय मनपरिवर्तन पर उस रूपक के ढंग से विचार करना स्वाभाविक ही है कि मसीही बनने पर हम परमेश्वर के राज्य के नागरिक बन जाते हैं। कलीसिया पर एक परिवार के रूप में विचार करने पर हम एकदम नये जन्म पर विचार करने लगते हैं। उसी प्रकार एक दुल्हन के रूप में विचार करते समय हम मसीह से विवाह होने अर्थात मनपरिवर्तन की उस प्रक्रिया पर विचार करते हैं जिसमें हम मसीही बनते हैं।

सचमुच में विवाह और कलीसिया के मसीह के साथ विवाह में तुलना अद्‌भुत है। परिवर्तित होने वाले को पहले यीशु में विश्वास करना आवश्यक है। फिर उसे अपने पुराने जीवन पर पश्चात्ताप करना आवश्यक है। उसके बाद, उसे प्रभु में विश्वास का अंगीकार करना आवश्यक है। फिर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा लेने की क्रिया आती है। बपतिस्मे की तुलना उस समारोह से की जा सकती है जिसमें पुरुष तथा स्त्री मिलकर एक होते हैं। प्रभु के साथ नये मसीही का ''विवाह'' तब तक पूर्ण नहीं होता जब तक वह बपतिस्मा नहीं ले लेता (मरकुस 16:16)। केवल विश्वास ही दो जनों को शादी के बन्धन में नहीं बांधता। अंगीकार से ही शादी सम्पूर्ण नहीं हो जाती; इसके लिए एक समारोह का होना आवश्यक है।

कोई और जीवन-साथी नहीं

रोमियों 7:1-6 में दूसरी सच्चाई बताई गई है। वहां पर पौलुस ने ज़ोर दिया कि किसी परिवर्तित के लिए मसीह के साथ विवाह करने से पहले अपने पूर्व साथी को छोड़ना आवश्यक है। उसने इस भाग में स्पष्ट किया कि वह पूर्व साथी मूसा की व्यवस्था थी। मसीह की मृत्यु ने हमें उससे स्वतन्त्र कर दिया। अब उसके अर्थात मसीह जो मुर्दों में से जी उठा है, के साथ विवाह करना सम्भव है। इस तथ्य पर गलतियों 3:23, 24; कुलुस्सियों 2:14; इब्रानियों 10:9, 10 सहित अन्य आयतों पर भी ज़ोर दिया गया है। जो लोग एक ही समय में मूसा की व्यवस्था और सुसमाचार के साथ चिपकने की कोशिश करते हैं, वे आत्मिक व्यभिचार के दोषी हैं।

मसीह की केवल एक ही कलीसिया है

इस अलंकार से जिस तीसरे सबक पर ज़ोर दिया गया है वह यह है कि मसीह की केवल एक ही कलीसिया है। मैंने यह नहीं कहा कि मेरे विचार से एक ही कलीसिया होनी चाहिए; न ही मैंने यह कहा कि किसी कॉन्फ्रेंस में एक गुट ने मिलकर यह फैसला लिया था कि एक ही कलीसिया हो तो अच्छा रहेगा। बल्कि, नया नियम सिखाता है कि मसीह की केवल एक ही कलीसिया है। मत्ती 16:18 और इफिसियों 5:25 जैसे पदों में जहां पर ''कलीसिया'' शब्द का इस्तेमाल एकवचन के रूप में हुआ है इस पर ज़ोर दिया गया है। विभिन्न अलंकार भी इस तथ्य को स्पष्ट करते हैं। नये नियम में ऐसे अलंकारों का इस्तेमाल किया गया है जो इस तथ्य पर स्वाभाविक ही ज़ोर देते हैं कि मसीह की केवल *एक-कलीसिया* है। उनमें से कोई भी इतना मजबूत नहीं है जितना कि यह विचार अर्थात कलीसिया मसीह की दुल्हन के रूप में है। मसीह ने एक से अधिक पत्नियां या पति को रखने की निन्दा की है। क्या उसकी शिक्षा और व्यवहार में कोई अन्तर था? क्या उसकी एक से अधिक पत्नियां हैं?

कलीसिया की शुद्धता

अब हम इस अलंकार द्वारा ज़ोर दिए जाने वाले मुख्य सबक अर्थात कलीसिया की शुद्धता पर आते हैं। उसकी दुल्हन के रूप में कलीसिया का चित्रण अपनी कलीसिया के लिए मसीह के मन में सम्मान को दिखाता है। उसने इसे पवित्र और शुद्ध किया है। वह अपनी दुल्हन का ध्यान रखता है। वह उसे बेदाग तेजस्वी दुल्हन के रूप में देखना चाहता है। मसीह उनको लेने के लिए आ रहा है जिन्होंने शुद्ध जीवन जीए हैं। उसकी दुल्हन अशुद्ध और अपवित्र लोगों से नहीं बनी होगी। इस सच्चाई से कलीसिया के हर एक सदस्य को यह समझ आ जानी चाहिए कि उसे कैसा जीवन जीना चाहिए ताकि दोबारा आने पर मसीह को उसे अपना कहने में प्रसन्नता हो (इफिसियों 5:23-35)।

सारांश

कलीसिया के रूप में जानी जाने वाली सुन्दर और महत्वपूर्ण हस्ती मसीह की दुल्हन ही है। परमेश्वर करे कि पवित्र आत्मा द्वारा प्रयुक्त इस तस्वीर से हमें कलीसिया के महत्व की मूल्यवान गहराइयों को समझने में सहायता मिले।

मसीही विकास के लिए पूर्वापेक्षाएं

मसीही जीवन विकास तथा उन्नति का जीवन है। मसीहियों के लिए पत्रियों में दी गई लगातार ताड़ना उनके आगे बढ़ने तथा विकास करने के लिए है। जीवन में विकास अनिवार्य है; उद्धार पाने के लिए भी इसका उतना ही महत्व है। (देखिए 1 पतरस 2:2.) विकास करने के लिए हमें क्या चाहिए?

उचित भोजन। भोजन के बिना, विकास नहीं हो सकता। परमेश्वर का वचन ही वह एक मात्र भोजन है जिससे आत्मिक विकास होता है। यही कारण है कि पतरस ने हमें ज्ञान में बढ़ने के लिए कहा है। इब्रानियों 5:12 ऐसे कुछ लोगों की बात करता है जिन्होंने विकास नहीं किया था और उन्हें अभी भी अन्न बल्कि दूध की ही आवश्यकता थी। स्वस्थ होने का एक चिह्न भूख लगना है। जो मसीही कई महीनों तक बिना बाइबल अध्ययन के रह लेता है उसे आत्मिक भोजन की भूख नहीं है। हमें वचन के दूध की लालसा करनी चाहिए।

उचित व्यायाम। इब्रानियों 5:14 व्यायाम को विकास के लिए आवश्यक बताता है। अन्न उन लोगों के लिए है जिन्होंने अभ्यास करके अपनी इंद्रियों को मजबूत कर लिया है। एक धावक उचित भोजन खाकर तथा लगातार अभ्यास करके अपने शरीर को सही अवस्था में रखता है। यदि कोई व्यक्ति अपनी बाजू को अपने शरीर के साथ बांध ले और उसका उपयोग न करे, तो वह सूख कर नकारा हो जाएगी। प्रत्येक मसीही के लिए देह के *गतिशील* सदस्य अर्थात अंग होना आवश्यक है।

उचित वातावरण। विकास करने के लिए उचित वातावरण आवश्यक है। हवा शुद्ध न होने के कारण शारीरिक विकास रुक जाता है। उसी प्रकार ''बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है'' (1 कुरिन्थियों 15:33)। मसीही जीवन जीने के लिए मसीही संगति बहुत सहायक है।